प्राकृतिक आयुर्विज्ञान विभाग

सेठ फतेहचंद पालीराम झुन्झुनुवाला नेचुरोपैथी सेन्टर

श्री जे.जे.टी. विश्वविद्यालय, झुन्झुनू–चूरु रोड, चुडेला–333001, जि. झुन्झुनू (राजस्थान)
फोन नं.: +91 8805886785, 9667979312/ ईमेल: sgr.0202@gmail.com/naturecure@jjtu.ac.in

एक संक्षिप्त परिचय

शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।

आधुनिक सभ्यता के दौर में मानव समाज प्राकृतिक नियमों की अवहेलना करके प्रकृति से जितना दूर जा रहा है उतना वह दण्ड स्वरुप अधिक रोग भोग रहा है। अतः मानव प्रकृती के नियमों को समझकर प्राकृतिक जीवनशैली को अपना सके तथा रोगावस्था में स्वस्त, सुलभ एवं संपूर्ण रूप से निर्दोष ऐसे योग, आयुर्वेद एवं प्राकृतिक उपचार पद्धतियों द्वारा स्वास्थ्य लाभ ले सके इस उद्देश्य से श्री जे.जे.टी.विंश्वविद्यालय के प्राकृतिक परिवेश में 'प्राकृतिक आयुर्विज्ञान एवं मानव मूल्य अध्ययन विभाग' द्वारा सेठ फतेहचंद पालीराम झुन्झुनुवाला नेचुरोपैथी केन्द्र का संचालन किया गया है। स्वास्थ्य क्षेत्र में कार्यरत दक्ष चिकित्सकों, विशेषज्ञों एवं प्रबुद्ध चिंतकों द्वारा जन सामान्यों के लिए आरोग्य मार्गदर्शन एवं उन्नत आरोग्य सेवायें उपलब्ध करवाना, प्राकृतिक आयुर्विज्ञान की विविध शाखाओं में अध्ययन–अध्यापन संपन्न करवाना तथा प्राकृतिक आयुर्विज्ञान के क्षेत्र में अनुसंधान कार्यक्रमों का संचालन करना यह इस केन्द्र का उद्देश्य रहा है।

आधुनिक चिकित्सा में अंर्तनिहित दोषों के विपरित प्राचीन भारतीय प्राकृतिक आयुर्विज्ञान के उपचार तंत्र स्वस्त, निर्दोष एवं रोगमूल का नाश करके पूर्ण स्वास्थ्य देने का सहस्त्रों सदियों से अनुभव रखते आये है।

स्वास्थस्य स्वास्थ रक्षणम् व्याधितानां व्याधिपरिमोक्षः। इस उद्देश्य की सार्वत्रिक परंपरा का अनुसरण करते हुऐ प्राणीजगत के कल्याण, दीर्घायु, सुखायु एवं दुःख विमुक्ति के अपुर्व आश्वासन से योग, आयुर्वेद एवं प्राकृतिक चिकित्सा के संयुक्त अभिगम द्वारा सर्वांगीन, सहज, सुलभ और कम से कम लागत पर उन्नत स्वास्थ्य सेवायें उपलब्ध करवाने जहां प्राकृतिक आयुर्विज्ञान केन्द्र प्रतिबध्द है। वहा योग, आर्युवेद एवं प्राकृतिक चिकित्सा का चयन करने के लिये आपका अभिनंदन एवं स्वागत है।

केन्द्र की विशेषतायें:

- श्री जेजेटी विश्वविद्यालय के प्रांगण में स्थापित इस केन्द्र के प्रशस्त भवन में महिलाओं एवं पुरुषों के उपचार हेतु स्वतंत्र व्यवस्था है।
- मसाज, भापस्नान, कटिस्नान, रीढ़स्नान, टबस्नान, मिट्टीपट्टी, मिट्टीलेप, शिरोधारा, शिरोबस्ति, शिरोपिचु, औषधिय काढ़ों का सेंक, एनिमा, एक्युप्रेशर, फिजिओथेरेपी एवं योग आदि विविध आयुर्वेदिक, प्राकृतिक एवं

यौगिक उपचारों हेतु महिला और पुरुष विभाग में अलग अलग कक्षों तथा उच्चश्रेणी के आधुनिक उपकरणों का उपयोग किया गया है।

- दूर के मरीजों के लिए सामान्य एवं वातानुकुलित आवास की सुविधा न्युनतम दरों में केन्द्र में उपलब्ध करवाई गयी है।

प्राकृतिक आयुर्विज्ञान क्या है?

योग, आयुर्वेद प्राकृतिक चिकित्सा एवं एक्युप्रेशर–फिजिओथेरेपी आदि निरापद, स्वस्त, सहज और सबके लिए सुलभ ऐसे चिकित्सा विज्ञान को संयुक्तिक रूप से प्राकृतिक आयुर्विज्ञान कहां जाता है।

प्राकृतिक चिकित्सा: प्रकृति के पंचभौतिक तत्त्व एवं उपतत्त्वों का चिकित्सकिय प्रयोग करके निर्दोष रुप से रोगी रोगमुक्त हो कर शरीर एवं मन को निरोगी एवं स्वस्थ रख सके यह विज्ञान प्राकृतिक चिकित्सा विज्ञान है।

आयुर्वेद चिकित्सा: सहस्त्रों सदियों से लोक समुदाय द्वारा स्वीकृत, समय की कसोटी पर खरी उतरी यह ऋषीओं द्वारा प्रेरित आयुर्विद्या हैं। मिथ्या आहार, विहार आदि से निर्मित विषोत्पत्ति को शारीरिक शुद्धी से दूर कर के प्रकृती की निरापद वनौषधिओं का उपयोग कर वातादि दोष एवं रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, शुक्र इत्यादी धातुओं में संतुलन स्थापित कर मानव को संपूर्ण स्वास्थ्य लाभ करवाना ही इस चिकित्सा का प्रयोजन है।

योग चिकित्सा: योगासन, प्राणायाम, ध्यान, धारणा, मुद्रा, आदि यौगिक क्रियाओं द्वारा शरीर में प्राण का नियामन एवं संतुलन कर के अंतस्त्रावी ग्रंथिओं के स्त्रोतों का संतुलन बनाकर शरीर और मन को स्वस्थ–सुंदर बनाने का तथा आत्म उन्नति का ध्येय साध्य करवानेवाला शास्त्र योगचिकित्सा विज्ञान है।

इसके अतिरिक्त अत्याधुनिक कम्प्युटराईज्ड मशिनो, एक्युप्रेशर एवं फिजिओथेरेपी द्वारा भी स्वास्थ्य सुधार का यहां अपूर्व प्रयास चल रहा है।

इन उपचार तंत्रों का अधिर न होते हुऐ श्रद्धापूर्वक निर्देशों का अनुसरण कर आप यहाँ से पूर्ण रूप से स्वास्थ्य लाभ ले सकते है।

केन्द्र में उपलब्ध चिकित्सा सुविधायें :

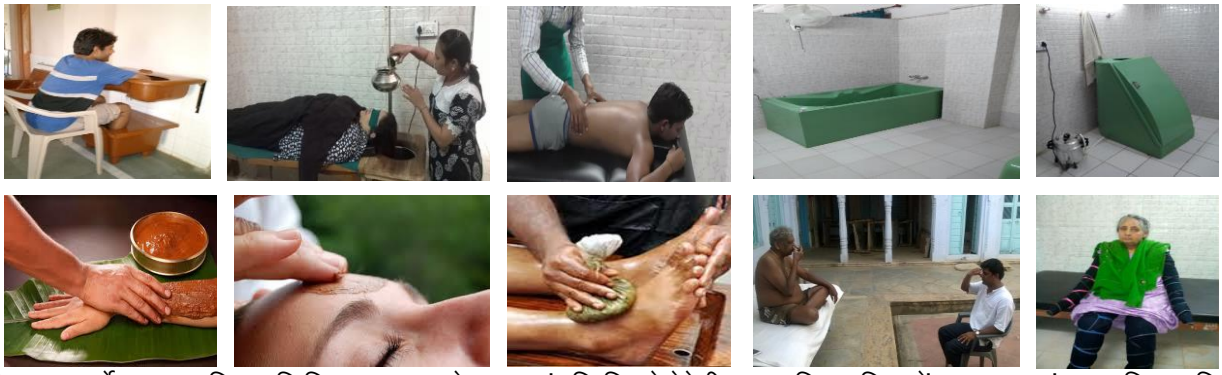

योग, आयुर्वेद, प्राकृतिक चिकित्सा, एक्युप्रेशर एवं फिजिओथेरेपी इत्यादि अभिगमों द्वारा यहां पर निम्न लिखित स्वास्थ सेवायें उपलब्ध करवाई जाती है।

- निरापद वनौषधीयों (जडी–बुटीयों) द्वारा उपचार।
- मसाज, औषधीय काढों का सेक, पोटली मसाज, पिंडस्वेदन, वमन, विरेचन्, एनिमा (बस्ती)।
- हृदयबस्ती, कटीबस्ती, जानुबस्ती, शिरोबस्ती, शिरोधारा, शिरोभ्यंग, शिरोपिचु, नस्य, नेत्रतर्पन, नेत्रधावन, कर्णपुरण, कवल, गण्डुंश, उद्वर्तनम् आदी संपूर्ण आयुर्वेद पंचकर्म उपचार।
- जलचिकित्साः ठंडा गरम पानी की पट्टी, कटिस्नान रीढ़स्नान, बाष्पस्नान आदि प्राकृतिक उपचार।
- मिट्टी चिकित्साः हर्बल मृतिकालेप, गोमयलेप, औषधि लेप–प्रलेप एवं सौदर्य चिकित्सा।
- योगासन, प्राणायाम, ध्यान, मुद्रा, एवं यौगिक शुद्धिक्रियों द्वारा तन और मन की चिकित्सा।
- अत्याधुनिक कम्प्युटराईज्ड मशीनों द्वारा एक्युप्रेशर एवं फिजिओथेरेपी सुविधा।
- पथ्या पथ्यः अर्थात आहार विहार का नियोजन एवं मार्गदर्शन की उपलब्धता।
- परिचर्चा, संगोष्ठीयों द्वारा मनोदैहिक स्वास्थ्य शिक्षा एवं आध्यात्मिक बोध का विकास।

- दूर के मरीजों के लिए न्युनतम दरों में सामान्य एवं वातानुकुलित आवास की सुविधा।

केन्द्र में निम्नलिखित रोगों का उपचार किया जाता है–

- मानसिक तनाव, अनिद्रा, अपस्मार, उन्माद, स्मृतिदौर्बल्य आदि मस्तिष्कतंत्र संबंधित विकृति।
- अजिर्ण, अम्लपित्त, अतिसार, कब्ज, कृमीरोग, मोटापा, मधुप्रमेह, यकृत–प्लीहा आदि उदर संबंधित विकार।
- नजला, जुकाम, ज्वर, श्वास, कास (दमा) आदि श्वसनतंत्र संबंधित विकृति।
- अनियमित रक्तदाब, हदय दौर्बल्य, हदयवेदना, हदयाघात आदि रक्त परिभ्रमण संबंधित विकार।
- आमवात, कंपवात, पक्षाघात, साईटिका, स्पोन्डीलाईटीस, कमर–जोडों का दर्द आदि वात संबंधित विकार।
- खुजली, एलर्जी, दाद, एक्झिमा, विचर्चिका, विस्फोट, मसूरिका, भवेतकृश्ठ आदि त्वचा संबंधित विकार।
- फोडा–फुन्सी, ग्रंथी (गांठे), गंडमाला, अपची, अर्बुद (कॅन्सर) आदि लसिकातंत्र संबंधित विकार।
- मुत्रावरोध, मुत्रदाह, बहुमुत्रता, शोथ (सूजन), अश्मरी (पथरी), किडनी आदि मूत्रतंत्र संबंधित विकार।
- फिरंग, उपदंश, स्वप्नदोष, ध्वजभंग, नपुसंकता, वंध्यत्त्व एवं स्त्रियों के मासिक संबंधीत रोग आदि बीमारीयों का यहां प्राकृतिक विधि से सफल उपचार किया जाता है।

हेल्थ शॉप:

औद्योगिक संस्कृती के जहरीले प्रभावों ने कृषी, वनस्पती, विविध जैव संसाधन एवं मानवीय स्वास्थ्य का स्पष्ट उल्लंघन किया है। उस परिपेक्ष्य में विकेंद्रित एवं अहिंसक उत्पादन तंत्र को अपनाते हुऐ विष्मुक्त एवं स्वास्थ्यवर्धक, कृषी और गृह उपयोगी उत्पादन के वितरण का यहा एक सामुहिक प्रयास किया गया है। यहां से आप चिकित्सा आनुषंगिक वस्तुये, स्वास्थ्य वर्धक, स्वास्थ्य संरक्षक जैविक खाद्यान्न एवं प्रदूषण मुक्त गृह उपयोगी उत्पाद प्राप्त कर आरोग्य लाभ के साथ साथ ग्रामीण समुह के किसान, मजदूर और परंपरागत कारीगरों के लिए रोजगार के अवसर उपलब्ध करवाकर सामाजिक स्वास्थ्य में भी योगदान दे सकते है।

शिक्षण–प्रशिक्षण उपक्रम:

प्राकृतिक आयुर्विज्ञान के वैज्ञानिक परिपेक्ष्य में योग्य चिकित्सक/अभ्यासक निर्माण होवें। प्राकृतिक आयुर्विज्ञान की विविध ज्ञान शाखाओं के विकास में वह निमित्त बने तथा राष्ट्रीय स्तर पर आरोग्य सेवकों और आरोग्य मार्गदर्शकों की जरूरत पूरी हो। इस उद्देश्य से प्राकृतिक आयुर्विज्ञान विभाग विश्वविद्यालय में योग प्रशिक्षण प्रमाणपत्र, डिप्लोमा इन योग शिक्षा एवं जीवन विज्ञान, डिप्लोमा इन प्राकृतिक स्वास्थ्य, योग एवं आहारशास्त्र, डिप्लोमा इन प्राकृतिक स्वास्थ्य एवं जड़ी–बुटी परिचय एवं जैव प्रसंस्करण आदि विविध विषयों पर पाठयक्रम निर्धारित करके शिक्षण–प्रशिक्षण के उपक्रम भी संचालित कर रहा है। प्रत्यक्ष संपर्क से अथवा हमारी बेव साईट से आप इस विषय की विस्तृत जानकारी प्राप्त कर इन पाठयक्रम में सहभाग ले सकते है।

नोट : विश्वविद्यालय परिसर दिल्ली से वाया रेवाडी–नारनौल होते हुए 275 कि.मी. एवं जयपुर से रींगस्–सीकर होते हुए 180 कि.मी की दूरी पर स्थित है। बस की सेवायें प्रातः 6.00 बजे से रात्रि 10.00 बजे तक उपलब्ध रहती है।

प्रस्तुति : सागरसिंह कछवा